तीन दिवसीय आर्य महासम्मेलन का भव्य समापन : देश भर के 5000 आर्य जन पहुंचे

जीवन मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन में शिक्षाविद् श्री दीनानाथ बत्रा का आह्वान

शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दीनानाथ बत्रा सम्बोधित करते हुए मंच पर बाएं से संयोजक श्री यशपाल यश (जयपुर), ब्र. दीक्षेन्द्र, स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुनानगर), आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य व स्वामी आर्यवेश जी द्वितीय चित्र में पुस्तक का विमोचन करते श्री सत्यपाल सिंह (एडीजी मुम्बई पुलिस), साथ में श्री अशोक आर्य (पंचकुला), श्री सुरेश आर्य, डॉ. अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री जीवन प्रकाश शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री व श्री रामकुमार सिंह

रविवार। दिनांक 29 जनवरी 2012, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के 33 वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का रामलीला मैदान, जी.टी.बी. एनक्लेव, दिलशाद गार्डन, दिल्ली में सायं 6 बजे समापन हो गया। सम्मेलन में देश के 15 प्रान्तों से लगभग 5000 आर्य प्रतिनिधि भाग लेने पहुंचे। सम्मेलन के अन्तर्गत प्रात: 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक 11 सत्र चले जिसमें मुख्य रूप से ''राष्ट्रीय एकता अखण्डता रैली, 251 कुण्डीय विश्व शान्ति महायज्ञ, राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन, व्यायाम शक्ति प्रदर्शन, वेद रक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, संगीत संध्या, आर्य महासम्मेलन, शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन, योग साधना शिविर आदि मुख्य थे।

समापन सत्र में ''शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन'' के अध्यक्ष श्री दीनानाथ बत्रा (अध्यक्ष, शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति) ने कहा कि आज भी लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति देश में चल रही है जो दिशा हीन व संस्कार हीन है, फिर युवा पीढ़ी से हम चरित्रवान बनने व भ्रष्टाचार मुक्त भारत की आशा कैसे कर सकते है। उन्होंने कहा कि शिक्षा व संस्कृति ही राष्ट्र का आधार है, लेकिन आज जब फिल्म स्टार हमारी युवा पीढ़ी के आदर्श होंगे तो वैसे ही नौजवान तैयार होंगे। भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन व श्रेष्ठ है। यह बात हमें नयी पीढ़ी को बतानी तथा समझानी भी है जिससे युवा पीढ़ी अपने इतिहास व पूर्वजों पर गर्व करना सीखे, उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हम हिन्दी भाषा को अपने जीवन में अपनायें हिन्दी राष्ट्रीय एकता की मूलाधार है। उन्होंने पाठ्य पुस्तकों से विकृतियां दूर कर जीवन मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज हिन्दू समाज को संगठित करने का देश व्यापी अभियान चलायेगा तथा युवा पीढ़ी को अपने इतिहास के बारे में सही जानकारी उपलब्ध करवायी जायेगी क्योंकि आज युवा पीढ़ी को गलत इतिहास पढ़ा कर दिग्भ्रमित किया जा रहा है। ओ३म् ध्वजारोहण स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा) ने किया।

सम्मेलन के संयोजक श्री यशपाल यश (जयपुर) ने कहा कि ''लिव इन रिलेशन शिप'' समाज में चरित्रविहीन पीढ़ी का निर्माण करेगा तथा इससे सामाजिक असंतुलन हो जायेगा। देश के महान शहीदों की जीवनी को पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित करने की मांग की गई। विभिन्न वक्ताओं ने कन्या भूण हत्या, बढ़ता जातिवाद, आरक्षण, प्रान्तवाद, भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास, पाखण्ड, नक्सलवाद, माओवाद व सरकार की वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की नीति पर चिन्ता व्यक्त की।

इस अवसर पर वैदिक विरक्त मण्डल के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी आर्य वेश जी (रोहतक), महामंत्री महेन्द्र भाई, आचार्य कृष्ण प्रसाद कौटिल्य (झारखण्ड), अशोक आर्य (चण्डीगढ़), कवि विजय गुप्त, स्वामी चन्द्रवेश (गाजियाबाद), आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य प्रकाशवीर शास्त्री, ब्र. दीक्षेन्द्र, आनन्दप्रकाश आर्य (हापुड़) आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुनानगर), वीरेन्द्र जरयाल, ओम सपरा आदि वैदिक विद्वानों ने उद्बोधन दिए। समारोह का शुभारम्भ 251 कुण्डीय यज्ञ के साथ डॉ. जयेन्द्र आचार्य ने करवाया।

आजादपुर मण्डी के सुरेन्द्र कोहली, मनोज दुआ, प्रवीन आर्या, जवाहर भाटिया, संजीव मान, रविन्द्र मेहता, देवेन्द्र भगत, रामकुमार सिंह, यशोवीर आर्य, सुदेश भगत, प्रणवीर आर्य, जीवन प्रकाश शास्त्री, सन्तोष शास्त्री, वेदप्रकाश आर्य, यज्ञवीर चौहान, विजयारानी शर्मा, सुरेश आर्य, कैप्टन अशोक गुलाटी, भोपाल सिंह आर्य (बिजनौर), अमरनाथ बत्रा, हरिचन्द्र आर्य, राजेश मेहन्दीरता, सुरेन्द्र शास्त्री, जगवीर सिंह आर्य, नरेन्द्र आर्य, ओम प्रकाश आर्य, ओमप्रकाश सेठी, जितेन्द्र सिंह आर्य, रिखबचंद जैन, हरिमोहन शर्मा (बब्बु), सुरेश मुखीजा, ओमप्रकाश गुप्ता, कमल गुप्ता, मायाराम शास्त्री, रवि चड्डा, दुर्गा प्रसाद कालरा, कांति प्रकाश आर्य, ओम प्रकाश सपरा, वीरेन्द्र आहूजा, रामहेत आर्या, अमीरचंद रखेजा, दुर्गा प्रसाद त्यागी (धौलापुर, राजस्थान), जगदीश प्रसाद शर्मा, माता सुषमा यति, आचार्य पुष्पा (रांची), सुदेश राय (जयपुर), राम भरोसे शाह, स्वामी यज्ञानन्द (रोहतक) आदि भी उपस्थित थे।

एक नया इतिहास बनाते हुए यह आर्य महासम्मेलन अपनी अलग छाप छोड़ गया। प्रात: यज्ञ के समय भयंकर सर्दी में हजारों श्रद्धालु यज्ञमानों की उपस्थिति, ऋषि लंगर का चारों दिन सुन्दर व निरन्तर प्रबन्ध, आर्य संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशको का सुन्दर समागम जो भारत भर में कहीं अन्यत्र दिखाई नहीं देता। आर्य युवकों व ब्रह्मचारियों की भारी उपस्थिति यानि की बहुसंख्या युवकों की रही। सम्भवत: यह पूर्वी दिल्ली के दिलशाद गार्डन का आर्य महासम्मेलन जनकपुरी, सफदरजंग, करोलबाग, अशोक विहार के भी रिकार्ड पीछे छोड़ गया। इसका सफलता का सारा श्रेय उन यज्ञ विरोधियों ऋषि दयानन्द के विरोधियों, वेद के विरोधियों को जाता है जिन्होंने आर्य जनता को भ्रमित कर यज्ञ व सम्मेलन में जाने से रोका। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि प्रदान करें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् अपने सभी संन्यासी गणों, विद्वानों, भजनोपदेशको, दानदाताओं, कर्मठ कार्यकत्ताओं का हार्दिक धन्यवाद आभार व्यक्त करता है। जिन्होंने ऋषि मिशन को पूरा करने में हमारा साथ दिया व कदम से कदम मिलाकर साथ चले। परमपिता परमात्मा का विशेष धन्यवाद कि मौसम खुल गया, सुहाना व धूप भरा हो गया, बड़ा ही आनन्ददायक, सुन्दर दृष्य बन पाया। कहां-कहां से लोग नहीं आये बिहार, चतरा (झारखण्ड), अहमदाबाद, जयपुर, उड़ीसा, वेस्ट बंगाल, जीन्द, हिसार, करनाल, देहरादून, हरिद्वार, बहादुरगढ़, मुरेना, फरीदाबाद, नोएडा, हापुड़, मथुरा, आगरा, बरेली, कासगंज, मेरठ, बागपत, शामली, मुजफ्फरनगर, सोनीपत, पंचकुला, चण्डीगढ़, रोहतक-वाह भई वाह ऋषि भक्त खिचे आये दिल्ली की ओर, सब ईश्वर की कृपा है भई।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी का शॉल व स्मृति चिन्ह से अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी व श्री रामलुभाया महाजन द्वितीय चित्र में विधायक डॉ. नरेन्द्र नाथ जी का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य व स्वामी यज्ञमुनि जी।

दयानन्द को तो बोध हो गया, हमें कब होगा?

सर्व प्रथम हमें यह सोचना होगा कि बालक मूलशंकर को शिवरात्रि के उस अनुष्ठान से ऐसा क्या मिल गया था। जिसने इस छोटी सी धर्म के नाम पर होने वाले विविध क्रियाकलापों में प्रायः घटित होते रहने वाली उस सामान्य सी घटना को इतना महत्व पूर्ण बना दिया कि पूरा आर्य जगत इसे बड़े उत्साह और उमंगों के साथ प्रति वर्ष मनाता है। इस घटना से मूलशंकर को क्या मिल गया था। जिसे अपना आदर्श बन कार हम प्रति वर्ष उसे पाने के लिए इस बोधपर्व को मनाते हैं। एक दूसरे ढंग से और सोचें कि इस घटना से मूलशंकर के कौन से विशेष गुण या उसकी किस प्रतिभा का दिग्दर्शन होता है जो हमें सब आर्यों को लालायित या आकर्षित करती रहती है? क्या है इस घटना में ऐसा जिसने इसे पौराणिक पर्व से ऊपर उठाकर आर्यों का पर्व बना दिया? जब विवेकशील आर्य यह जानने के लिए अन्तर्मन को टटोलेंगे तो सबके सामने एक सत्य प्रकट होगा और वह यह कि इस सामान्य सी घटना ने बालक मूलशंकर से सत्यनिष्ठ हृदय को विवेकनिष्ठा बुद्धि को यह बता दिया था कि तुम जिस कल्पित शिवशंकर की कृपा व दया पाने के लिए यह अनुष्ठान कर रहे हो उसका इस प्रस्तर खण्ड के साथ दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं। इस घटना से यह प्रमाणित हो गया था कि यह पत्थर वो शिव नहीं जिसे पाने के लिए तुम यह व्रतानुष्ठान कर रहे हो। इस घटना में इससे अधिक कुछ भी नहीं था-यदि इससे अधिक नहीं कुछ था तो वह बालक मूलशंकर के शंकालु हृदय व जिज्ञासु मस्तिष्क में था। हृदय व मस्तिष्क के अन्तर्द्वन्द ने बालक को सत्याग्रही व असत्यद्रोही बना दिया। मूलशंकर विचलित हो उठा इस नए सत्य की अंगुली थाम कर उसने पिता से प्राप्त सब मिथ्या ज्ञान को झटक दिया।

कोई भी घटना अपने आप में छोटी या बड़ी नहीं होती इस घटना को देखने-परखने वाली आंखे कहां तक देख पाती हैं। उसे समझने वाली बुद्धि कहां तक समझ पाती है वह हमारी चेतना को कहां तक प्रभावित कर पाती है यह उस घटना से सर्वथा अलग बात है। उस घटना का यह प्रभाव बालक मूलशंकर के हृदय पर ही क्यों पड़ा उसके पिता व पुजारी आदि वह निष्कर्ष क्यों न निकाल सके जो बालक मूलशंकर ने निकाला? वे इस पाखण्ड को उस बालक की तरह क्यों नहीं त्याग सके? आर्यो! आत्म चिन्तन का स्वभाव बनाओ हर बात की गहराई में जाने का प्रयास करो-क्या आप जानते नहीं कि सत्य का मुख चमकीले आवरण से ढका हुआ है-आप भी ऋषियों की तरह-**'तत्वंपूषन्नपावृणु सत्यध र्माय दृष्टये'** की पुकार लगाया करो। आज भी जगाओ अपने उस विवेक को जो भौतिक चकाचौंध को छेदकर बालक मूलशंकर की तरह अन्तर्निहित सत्य के दर्शन करा सके। बोध तो मूलशंकर बनकर ही होगा। हम तो बहुत सारे पाखण्डों के प्रतिनिधि बनकर मन्दिर के पुजारी की तरह सत्य का गला दबाते रहते हैं-हम बालक दयानन्द को भी अपना आदर्श बना सके, वेदवेता दयानन्द से क्या प्राप्त कर सकेंगे? उसकी बाल दृष्टि हमारी परिपक्व प्रतिभा के बौनेपन से इतनी ऊंची व महान् थी तो उसकी परिपक्व प्रतिभा का आंकलन करना भी असम्भव की सीमा तक कठिन है।

हां, हमें ऋषि बोधपर्व मनाना चाहिए-मूलशंकर बन कर न सही लेकिन पुजारी बनकर भी नहीं। हमारा आदर्श बहुत महान है तो क्या हम अपने नन्हें कदमों से उसका अनुगमन तो कर सकते हैं। ध्यान रखना यदि असत्य के प्रति आकर्षण हृदय में बना रहेगा, तो वह सत्य को पांव नहीं जमाने देगा। वह हमारे विवेक को विचलित करता रहेगा। जब तक हम सत्यशील न बनेंगे, तब तक हम ऋषि-बोधपर्व मनाने के अधिकारी नहीं हो सकते। आज हमारे सारे विवाद सारे झगड़े, ये आरोप प्रत्यारोप इस बात के प्रमाण हैं कि आर्यों के छद्म वेश में ऐसे लोग भी प्रतिष्ठा पा चुके है जो पाखण्डी हैं। सत्य कोई बहुरूपिया नहीं होता कि अलग-अलग लोगों के सामने अलग-अलग वेश रखकर प्रकट हो। अगर आज विवाद है तेा सत्यशीलता का ढोंग करने वाले अनार्यों के कारण है। कोई माने या न माने लेकिन सच यह है कि जब तक हम वेदाज्ञा के पालन में स्वयं को सर्वात्मना समर्पित करते हुए, आर्य मर्यादा के अनुसार सदाचार पूर्वक निःस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा में प्रवृत्त न होंगे, तब तक हम स्वयं को ऋषि का अनुयाई कह कर बोध-पवे मनाने के अधिकारी नहीं है।

आज हमारे मध्य में ऐसे तथा कथित आर्य पद और प्रतिष्ठा पा चुके हैं जो सामान्य सदस्यता के भी योग्य नहीं है। अग्निवेश जैसे 'विषकुम्भ पयोमुखम्' भी 10-20 आर्यनामधारियों का दल बनाकर अपनी पाप वृत्तियों का परचम लहरा रहे हैं। हम आर्य कहलाने वालों के लिए कितनी लज्जाजनक बात है कि एक आदमी समलैंगिक सम्बन्धों की खुली वकालत करके सरकार व न्यायालय को हस्ताक्षर युक्त पत्र भेजकर भी हमारे कथित आर्यों का नेता बना हुआ है। कलम के कलाकार उसके कलुषित कार्यों को शब्दों के आवरण में छिपा रहे हैं। एक पतित आचरण वाला व्यक्ति आर्यत्त्व को कलंकित करता रहे और हम बोध पर्व मनाते रहें। अग्निवेश दल का राजस्थान प्रभारी अपने समर्थकों के मध्य तथा कथित चुनावी सभा में यह कहकर समर्थन मांगता है कि मैंने अग्निवेश से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया है। अग्निवेश अपने ही कई लोगों के लिए 'कोयला की दलाली' जैसे प्रतीत होने लगा है मगर कुछ लोग चांदी के चन्द टुकड़े हर महीने पा कर इस कलंक को भी पचा रहे हैं। ऐसे लोगों के लिए बोधपर्व की क्या उपयोगिता हो सकती है?

हमारा अन्तर्बोध कई प्रकार से उभर कर सामने आता रहता है एक स्वनाम धन्य आर्य साधु की साधुता देखिये उन्होंने यज्ञ-प्रार्थना का ही अंगछेदन कर डाला। सभी आर्य बड़ी श्रद्धा के साथ गाया करते थे-'अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को' लेकिन अब कुछ प्रतिष्ठित प्रकाशक एक साधु की कृपा से पञ्च यज्ञादिक रचायें विश्व के उपकार को छाप रहे हैं। जब यज्ञ प्रार्थना में स्पष्ट 'नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहे की प्रार्थना है तो ये पंचयज्ञादि कौन से हैं जो नित्य श्रद्धा और भक्ति के साथ किये जाने वाले यज्ञों से भिन्न है जिनके लिए पुनः प्रार्थना करने हेतु यह अवाञ्छित परिवर्तन करना पड़ा। यज्ञ प्रार्थना के रचयिता पं. लोकनाथ जी ने बड़ी दूर दृष्टि से काम लेकर नित्य श्रद्धा भक्ति से नित्य करणीय पञ्चयज्ञों से लेकर बड़े-बड़े अश्वमेध यज्ञ तक रचने की उत्तम प्रार्थना की थी, लेकिन आज हमारे परिवर्तन प्रिय आर्यों को नए-नए बोध हो रहे हैं। ये बोध एक बात को दोबारा कहकर पुनरूक्ति दोष तो पैदा कर ही रहे हैं, साथ ही अश्वमेधादि बृहद् यज्ञों के अनुष्ठान की भावना विलुप्ति का ज्ञान घोटाला करने का दूसरा अपराध भी कर रहे हैं।

आर्यो! इस प्रकार की गतिविधियां ऋषि बोध का अपमान है। ऐसे कुबोध क्लेश ही बढ़ाते हैं, इनसे दुःखी होकर मैंने कई वर्ष पूर्व लिखा था-''क्लेश वर्धिनी कुबोधिता से इस समाज को मुक्त करो रे। सज्जन का सम्मान और अपराधी को अभियुक्त करो रे।।'' ऋषि बोधपर्व पर सब सत्यनिष्ठ आर्यों को संकल्प लेना चाहिए कि हम न तो सिद्धान्त विरुद्ध कुछ करेंगे न होने देंगे। हम वेद विरोधी गतिविधियों के मूक दर्शक नहीं बनेंगे। हम दूसरों को उपदेश देते रहते हैं कि तुम्हारे ऊपर ऋषि के महान उपकार हैं लेकिन यह कभी नहीं सोचते कि हम उस ऋषि के सर्वाधिक ऋणी हैं। हमे सामाजिक पद-प्रतिष्ठा मिले हैं आर्य जैसा श्रेष्ठ सम्बोधन मिला है, वृद्ध समुदाय को अर्थलाभ भी मिलता है-क्या हमारा कुछ भी कर्त्तव्य नहीं? हमारी पुरानी पीढ़ी हमारे लिये कितने श्रेष्ठ व गौरव पूर्ण आदर्श छोड़ गई है हमें सोचना चाहिए कि हम भावी पीढ़ी के लिये क्या छोड़ कर जा रहे हैं? क्या भावी पीढ़ी को भी स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, स्वामी वेदानन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के तप त्याग एवं सदाचार के उदाहरण देकर काम चलाना पड़ेगा? आर्यों तनिक विचार तो करो कि उन्हें हमारे बारे में कुछ कहना पड़ा तो वे क्या कहेंगे? आज की पत्र पत्रिकाओं के आधार पर अगर निष्पक्ष होकर वे हमारे बारे में ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे तो वे किस स्तर के होंगे? उनको हमारे आर्यत्व पर कुछ टिप्पणी करनी पड़ी तो वह निशचित रूप से लज्जा जनक होगी।

आर्यो! कौन सोच सकता है कि कभी हमारे वर्तमान को गौरव पूर्ण शब्दों में याद किया जाएगा? क्या इतिहास की तीक्ष्ण दृष्टि से हम अपनी कालिमा को छिपाये रख सकेंगे? नहीं अपनी काली करतूते चाटुकारों की कल्पीत प्रशंसा के आवरण में छिपी नहीं रह सकती। आओ! अपने अन्दर बैठी सत्य के प्रति श्रद्धा का सम्मान करो। भटकना कोई बुरी बात नहीं यदि वह पथ भ्रष्टता न बने। हमें सम्भलना होगा। राष्ट्र और समाज अधपतन की ओर दौड़ रहे हैं। अग्निवेश जैसे षड्यत्रकारियों के मायाजाल को नष्ट करना होगा। महर्षि के तप, त्याग और बलिदान को हृदय में ताजा करके उनके भावों को आत्मसत्कार करके कर्मक्षेत्र में एक योद्धा की भूमिका में उतरना होगा यही बोधपर्व की सार्थकता है!!

राम निवास 'गुण ग्राहक', 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

।। ओ३म् ।।

188वें महर्षि दयानन्द जन्म दिवस के उपलक्ष्य में
केन्द्र सरकार व दिल्ली सरकार से आर्य समाज की मांग
महान समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी, आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर ''सार्वजनिक अवकाश'' घोषित करो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली
के तत्वावधान में

विशाल धरना व प्रदर्शन

वीरवार, 16 फरवरी 2012, प्रातः 10:00 बजे से 2:00 बजे तक
स्थान : जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली-110001

अध्यक्षता: स्वामी आर्यवेश जी (महामंत्री, वैदिक विरक्त मंडल) ● यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

मुख्य वक्ता

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री	श्री जयभगवान गोयल	डॉ. जयेन्द्र आचार्य
आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री	डॉ. वीरपाल विद्यालंकार	श्री प्रकाशवीर शास्त्री
श्री मायाप्रकाश त्यागी	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम	श्री वीरेन्द्र योगाचार्य
श्रीमती गायत्री मीना	आचार्य धूमसिंह शास्त्री	श्री सूर्यदेव त्यागी
श्री मनोहरलाल चावला	डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया	श्रीमती प्रभा सेठी

आमन्त्रित आर्य नेता : सर्वश्री रामकृष्ण सतीजा, रविन्द्र मेहता, श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, श्री. ओमप्रकाश मान, जितेन्द्र डावर, दुर्गाप्रसाद कालरा, रचना आहूजा, उर्मिला आर्या, जितेन्द्रसिंह आर्य, राकेश मेहन्दीरत्ता, सुरेन्द्र शास्त्री, नीता खन्ना, विद्यारानी शर्मा, लक्ष्मी सिन्हा, सुनीता बुग्गा, विम्मी अरोड़ा, मनोरमा धई, प्रियव्रत शास्त्री, संगीता नीलम, कै.अशोक गुलाटी, पुष्पलता वर्मा, देवव्रत आर्य, महावीरसिंह आर्य, सी.एल.मोहन, अमीरचन्द रखेजा, हीरालाल चावला, पंडित सुरेश झा, मनु सिंह, वेदप्रकाश चौधरी, मुकेश सुधीर, जगवीरसिंह आर्य, बलबीर चौहान, विनोद कक्कड़, जगदीश मलिक, डा. दयानन्द आर्य, बलवानसिंह आर्य, ओमप्रकाश वेहन, अनुराग मिश्रा, यशशरण कुलश्रेष्ठ, प्रभा ग्रोवर, स्वर्ण गम्भीर, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, शकुन्तला नागिया, विजय चोपड़ा, अर्चना पुष्करणा, विजय गुप्ता, डॉ० दोवेन्द्र, गोपाल जैन, वेदप्रकाश आर्य, बी.के. रैली, धरमसिंह नागर, रविदेव गुप्ता, हरिचन्द आर्य, सुमन नागपाल, आशा गुप्ता, आचार्य सुधांशु, रामभरोसे शाह, चन्द्रमोहन कपूर, श्यामलाल सेतिया, सरोज-जयाकर भाटिया, मकेन्द्र कुमार, रामदेत आर्य, अमरनाथ बत्रा, हरबीर सिंह, आनन्दप्रकाश आर्य, जीवनप्रकाश शास्त्री, रामचन्द कपूर, विजय सब्बरवाल, रणवीरसिंह आर्य, कान्तिप्रकाश आर्य, जगदीशशरण आर्य, रमेश योगी

महर्षि दयानन्द के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए साथियों सहित भारी संख्या में पहुंचे
कार्यक्रम के पश्चात ''ऋषि लंगर'' अवश्य ग्रहण करें।

-: निवेदक :-

डा.अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राकेश भटनागर राष्ट्रीय मंत्री	रामकुमार सिंह प्रान्तीय संचालक	संतोष शास्त्री प्रान्तीय महामंत्री
महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	प्रवीन आर्य राष्ट्रीय मंत्री	धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	सुरेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री	देवेन्द्र भगत प्रेस सचिव

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007 - फोन : 9810117464, 9312406810, 9868064422

महात्मा वशिष्ट मुनि अभिनन्दन समारोह की झलकियां

रविवार 01 जनवरी 2012, महात्मा वशिष्ट मुनि अभिनन्दन समारोह में पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सुब्रमणियम स्वामी का अभिनन्दन करते पूर्व महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी, श्री एच.एल. मल्होत्रा, श्री रामकृष्ण सतीजा व डॉ. अनिल आर्य द्वितीय चित्र में समारोह की शानदार सफलता से अभिभूत आचार्य अखिलेश्वर जी डॉ. अनिल आर्य का माल्यापर्ण कर बधाई देते हुए

उत्साह व जोश के प्रतीक डॉ. अनिल आर्य शोभायात्रा में उद्घोष करते हुए

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

रविवार 8 जनवरी 2012, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आर्य समाज नौरोजी नगर में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह में मंच पर बाएं से श्री विजय गुप्त, श्री महेन्द्र भाई, श्री रवि देव गुप्ता, श्री हरबंसलाल कोहली, श्री धर्मपाल आर्य, श्री प्रियव्रत शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य, आचार्य सतीश सत्यम् आदि।

L. R. Saini
Regional Director

DAV Public Schools & Colleges
Ranchi Zone
Bariatu Road, Ranchi - 834 009
Tele : (O) 0651 - 2541076, (R) 2510484
Fax : 0651- 2543384
Mobile : 9431114436
E-mail : rdlrs2008@gmail.com, rdda.ranchi@hotmail.com

Arya Samaj/2012/ 7296
Date: 07.01.2012

Dr. Anil Arya
President
Kendriya Arya Yuvak Parishad
Arya Samaj, Kabir Basti
Purani Subji Mandi
Delhi – 110 007

Dear Sir,

Thanks for your invitation for attending the 251 कुण्डीय विराट् यज्ञ to be held from 27th to 29th January 2012 on the occasion of 33rd Annual Summit of Kendriya Arya Yuvak Parishad, New Delhi.

You are organizing different camps, functions and programmes under the banner of Kendriya Arya Yuvak Parishad around the year and preaching the ideals of Maharshi Dayanand Saraswati and Arya Samaj to the society. It is indeed a noble deed and I congratulate you and all the members of Kendriya Arya Yuvak Parishad, New Delhi.

With best wishes,

Yours sincerely,

(L. R. Saini)
Regional Director

Striving for the cause of Education in Jharkhand, West Bengal, U.P., M.P. & C.G.

DAV College Managing Committee, Chitragupta Road, New Delhi - 110055
Phone : (011) 23515951. Fax : (011) 23632620, 23540556

लाजपतराय की 146वीं जयन्ती (28 जनवरी)

- आपका नाम गिने-चुने देशभक्त महापुरुषों में अग्रगण्य है।
- स्वतन्त्रता सेनानियों की सूची आपके नाम के बिना अधूरी है।
- आप आर्य समाज को मां की तरह मानते थे।
- आप 1888 में कांग्रेस में कार्य करने लगे। आप वहां गरम दल के नेता माने जाते थे।
- आप औपनिवेशिक स्वतन्त्रता के समर्थक नहीं थे, बल्कि लोकमान्य तिलक की भांति पूर्ण स्वतन्त्रता के पक्ष में थे।
- आपने पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना 1895 में की थी जो आप सबसे बड़े बैंकों में गिना जाता है।
- आप 1925 में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने थे।
- 30 अक्टूबर 1928 को साइमन कमीशन के लाहौर आने पर लाजपतराय के नेतृत्व में जबरदस्त विरोध व प्रर्दान किया गया। पुलिस ने जमकर लाठीचार्ज किया। लाजपतराय को सैकड़ों लाठियां लगीं, वे बेहोश होकर गिर पड़े।
- वे बब्बर शेर की तरह दहाड़ते थे। जनता उन्हें प्यार से पंजाब केसरी लाला लाजपतराय कहने लगी थी।

विचित्रता

1. आपके पिताजी मुस्लिम त्यौहारों को भी मनाते थे और रोजे भी रखते थे, जबकि माता जी सनातन धर्मी थीं, किन्तु आप वैदिक धर्मी/आर्य समाजी बने और गर्व से आर्य समाज का निर्माण किया।
2. आपकी जयन्ती कांग्रेस, हिन्दू महासभा, आर्य समाज, वैश्य सभा तथा पंजाबियों द्वारा मनाई जाती है।
3. आप जन्म से वैश्य थे किन्तु कर्म से क्षत्रिय जैसे थे।
4. नगर में लाजपतपुरी मोहल्ला है जिसमें 40 क्वार्टर व दुकानें मुख्य रूप से पंजाबियों की हैं। इन्द्रदेव गुलाटी की प्रेरणा से 2009 से मोहल्ले के दुर्गा मंदिर में 28 जनवरी को लाला लाजपतराय जयन्ती मनाई जाने लगी है।

–वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल, 26 पी.के. रोड, बुलन्दशहर

टंकारा चलो टंकारा चलो

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) एंव विभिन्न धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा दिनांक 16 फरवरी से 28 फरवरी 2012 तक करवाई जायेगी, किराया प्रति सवारी 4000 रुपये रहेगा।

सम्पर्क करें **मास्टर सोमनाथ,** 363, प्रताप नगर, गुड़गांव
फोन : 9811762364, 8800115646

आचार्य अखिलेश्वर जी को पितृ शोक

आर्य जगत के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् आचार्य अखिलेश्वर जी के पूज्य पिताजी का गत दिनों निधन हो गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

नाम व प्रशंसा की भूख

जमशेद जी मेहता कराची के प्रख्यात सेठ थे। एक अस्पताल के लिए चन्दा एकत्र किया जा रहा था। चंदा देने वालों को यह बताया जाता था कि जो दस हज़ार रुपये दान में देंगे उनके नाम के पत्थर अस्पताल के मुख्य द्वारा पर लगाए जाएंगे। बहुत से व्यक्तियों ने दस हज़ार या इससे भी अधिक रुपये दान में दिए ताकि उनके नाम का पत्थर अस्पताल के मुख्य द्वार पर लग जाए। परन्तु जमशेद जी मेहता ने दस हज़ार में से चालीस रुपये कम दिए। इस पर किसी ने कहा कि सेठ जी चालीस रुपये और दे दें तो आपके नाम का पत्थर भी लग जाएगा। इस पर सेठ जी ने उत्तर दिया कि सेवा में जो आनंद है, वह आनंद नाम का पत्थर लगवाने में नहीं है। **–सुभाष चन्द गुप्ता**

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की सचित्र झलकियां

मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह (एडीजी महाराष्ट्र पुलिस) का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी व डॉ. अनिल आर्य, अग्रवाल सम्मेलन के श्री सत्यभूषण जैन का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य व श्री बी.एल. शर्मा प्रेम, समाजसेवी श्री एम.के. राजपूत का अभिनन्दन करते श्री सत्यव्रत सामवेदी व स्वामी दिव्यानन्द जी।

वेद रक्षा सम्मेलन में वैदिक विरक्त मण्डल के प्रचार मंत्री स्वामी यज्ञमुनि दीप प्रज्जवलित करते हुए,
आर्य नेता श्री रामलुभाया महाजन व डॉ. आर.के. आर्य के अभिनन्दन का दृश्य।

विधायक श्री वीरसिंह धिगान का स्वागत करते श्री सुरेन्द्र शास्त्री, श्री सुशील आनन्द व श्री महेश भयाना, श्री जितेन्द्र पाहुजा के अभिनन्दन का दृश्य
तथा शोभा यात्रा में आर्य माताएं।

शोभायात्रा में भाग लेते कन्या गुरुकुल झारखण्ड, गुरुकुल गौतमनगर, खेड़ा खुर्द, नोएडा, गाजियाबाद के ब्रह्मचारी व दाएं परिषद् के शिक्षक श्री प्रदीप आर्य, सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य, प्रणवीर आर्य, आशिष आर्य व योगेन्द्र शास्त्री

शोभायात्रा के अग्रिम जत्थे की एक झलक, मोटर साईकिल सवार युवक युवतियां, आर्य समाज दिलशाद गार्डन के सदस्य स्वागत के लिए उत्सुक।

राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन में डॉ. अनिल आर्य का स्वागत करते महिला प्रतिनिधि, प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी का स्वागत करते प्रवीन आर्या व अनिता चौधरी,
शोभा यात्रा का संचालन करते डॉ. अनिल आर्य।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970